IASBABA

One Stop Destination for UPSC/IAS Preparation

60 Days Week-9 & 10 Compilation

DELHI

5B, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi –110005. Landmark: Just 50m from Karol Bagh Metro Station, GATE No. 8 (Next to Croma Store)

Ph:0114167500

BANGALORE

#1737/37, MRCR Layout, Vijaynagar Service Road, Vijaynagar, Bangalore 560040. PH: 09035077800 / 7353277800

support@iasbaba.com

www.iasbaba.com

Q.1) राष्ट्रकूट वंश के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?

a) इसकी स्थापना दंतिदुर्ग ने की थी, जिसने गुर्जरों को हराया था।
b) उनके तहत, मंदिर वास्तुकला की वेसर शैली पहली बार प्रकट हुई थी।
c) राष्ट्रकूट वंश के कृष्ण प्रथम ने एलोरा में शानदार शिलाकृत एकाश्म कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया था।
d) राष्ट्रकूट वंश के अमोघवर्ष प्रथम को अक्सर उनके धार्मिक स्वभाव के कारण "दक्षिण का अशोक" कहा जाता था।

Q.1) Solution (b)

- राष्ट्रकूट कन्नड़ मूल के थे और कन्नड़ भाषा उनकी मातृभाषा थी। दन्तिदुर्ग राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक था। उसने गुर्जरों को पराजित किया तथा मालवा पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात्, उसने कीर्तिवर्मन द्वितीय को हराकर चालुक्य साम्राज्य का विनाश किया। इस प्रकार, राष्ट्रकूट दक्कन में एक सर्वोपरि शक्ति बन गये।
- चालुक्य कला के महान संरक्षक थे। उन्होंने संरचनात्मक मंदिरों (**structural temples**) के निर्माण में वेसर शैली विकसित की। हालांकि, वेसर शैली राष्ट्रकूट और होयसल के अंतर्गत ही अपने चरमोत्कर्ष तक पहुंची। इसलिए विकल्प (बी) गलत है।
- एलोरा और एलीफेंटा में राष्ट्रकूटों की कला और वास्तुकला देखने को मिलती है। एलोरा में, सबसे उल्लेखनीय मंदिर कैलाश मंदिर है। कृष्णा प्रथम ने गंग और वेंगी के पूर्वी चालुक्यों को हराया। कृष्ण प्रथम ने एलोरा में शानदार शिलाकृत एकाश्म कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया।
- अमोघवर्ष प्रथम (814–878 ई.) राष्ट्रकूट के सबसे प्रसिद्ध शासकों में से एक था, जिसने एक नई राजधानी का निर्माण किया, जो मान्याखेत (आधुनिक मलखेड) थी। उन्होंने वेंगवल्ली में आक्रमणकारी पूर्वी चालुक्यों को हराया और वीरनारायण की उपाधि धारण की। वे साहित्य के संरक्षक थे तथा स्वयं कन्नड़ और संस्कृत में निपुण विद्वान थे। उन्होंने कविराजमर्ग लिखा, जो काव्यों पर सबसे प्रथम कन्नड़ कार्य था और संस्कृत में प्राणोत्सर्ग रत्नमाला लिखा। उनके धार्मिक स्वभाव, कला और साहित्य में उनकी रुचि तथा उनके शांति-प्रिय स्वभाव के कारण, उनकी तुलना अक्सर सम्राट अशोक से की जाती है और उन्हें "दक्षिण का अशोक" कहा जाता है, एवं उनकी तुलना विद्वान पुरुषों को संरक्षण देने के लिए गुप्त राजा विक्रमादित्य से भी की जाती है।

Q.2) पाल साम्राज्य का पूर्वी भारत में नवीं शताब्दी के मध्य तक प्रभुत्व था। निम्नलिखित में से कौन सा कथन पाल साम्राज्य के बारे में सही नहीं है / हैं?

1. धर्मपाल के अधीन पाल साम्राज्य ने असम, उड़ीसा और नेपाल तक विस्तार किया।
2. पाल का रोमन साम्राज्य के साथ घनिष्ठ व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क था।
3. पाल शासक बौद्ध धर्म के साथ-साथ जैन धर्म के महान संरक्षक थे।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.2) Solution (d)

- 750 -1000 ईस्वी सन् की अवधि को तीन महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्तियों के विकास से चिह्नित किया गया था, अर्थात्, गुर्जर-प्रतिहार (जो पश्चिमी भारत और ऊपरी गंगा घाटी में 10 वीं शताब्दी के मध्य तक प्रभावी थे), पाल (जिन्होंने 9 वीं शताब्दी के मध्य तक पूर्वी भारत पर शासन किया था), और राष्ट्रकूट (जिन्होंने दक्खन पर अपना प्रभाव बना लिया था तथा उत्तर और दक्षिण भारत के क्षेत्रों पर भी नियंत्रण किया था)।

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	असत्य	असत्य
देवपाल (810 -850 ई.) ने प्राग्योतिषपुर / कामरुप (असम), उड़ीसा (उत्कल) के कुछ हिस्सों और आधुनिक नेपाल को शामिल करने के लिए पाल साम्राज्य का विस्तार किया। उन्होंने पूरे उत्तर भारत में हिमालय से लेकर विंध्य तक और पूर्व से पश्चिमी महासागरों तक शुल्क/ उपहार लेने का दावा किया।	उत्तरी भारत में, 750–1000 ई. अवधि को ठहराव की अवधि माना जाता था तथा यहां तक कि व्यापार और वाणिज्य के मामले में भी गिरावट आई थी। यह मुख्य रूप से रोमन साम्राज्य के पतन के कारण था जिसके साथ पहले भारत ने व्यापार संबंधों को समृद्ध किया था। पाल का दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्क था।	पाल राजा बौद्ध धर्म, विशेषकर महायान और बौद्ध धर्म के तांत्रिक स्कूल के अनुयायी थे। उन्होंने पूर्वी भारत में मठ (विहार) और मंदिर बनाकर इस धर्म को बहुत बढ़ावा दिया। पाल की विरासत अभी भी तिब्बती बौद्ध धर्म में परिलक्षित होती है। पाल शासक केवल बौद्ध धर्म के महान संरक्षक थे।

Q.3) भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. पहला मुस्लिम राज्य भारत में अजमेर में मजबूती से स्थापित किया गया था।
2. तराइन की दूसरी लड़ाई में कन्नौज पर मुसलमानों का अधिकार हो गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) न तो 1 और न ही 2

Q.3) Solution (a)

कथन 1	कथन 2
सत्य	असत्य
उत्तर भारत के हिंदू राजकुमारों ने पृथ्वीराज चौहान के नेतृत्व में एक संघ का गठन किया। 1191 में दिल्ली के पास तराइन की पहली लड़ाई में पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी को हराया। इस पराजय से गोरी ने बहुत अपमानित महसूस किया। 1192 में तराइन के आगामी युद्ध में, मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज की सेना को पूरी तरह से पराजित कर दिया, जिसे पकड़ लिया गया और मार दिया गया। तराइन की दूसरी लड़ाई एक निर्णायक लड़ाई थी। यह राजपूतों के लिए एक बड़ी आपदा थी। पहला मुस्लिम राज्य, इस प्रकार भारत में अजमेर में मजबूती से स्थापित हुआ और भारत के इतिहास में एक नया युग आरंभ हुआ।	1193 में कुतुब-उदीन ऐबक ने मुहम्मद गोरी द्वारा एक और आक्रमण के लिए जमीन तैयार की। यह आक्रमण गढ़वाल शासक जयचंद्र के खिलाफ निर्देशित किया गया था। मुहम्मद ने जयचंद्र की सेनाओं को पराजित किया। चंदावर की लड़ाई के बाद कन्नौज पर मुसलमानों अधिकार हो गया था। तराइन और चंदावर की लड़ाइयों ने भारत में तुर्की शासन की स्थापना में योगदान दिया।

Q.4) दिल्ली सल्तनत के विभागों के निम्नलिखित युग्मों पर इसके प्राथमिक कार्यों के साथ विचार करें:

1. दीवान-ए- रियासत - धार्मिक मामलों का विभाग।
2. दीवान-ए- कोही - कृषि विभाग।
3. दीवान-ए- बंदगान - दासों का विभाग।

ऊपर दी गई कौन सी जोड़ी सही ढंग से सुमेलित है / हैं?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.4) Solution (c)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	सत्य	सत्य
अलाउद्दीन खिलजी ने दीवान-ए-रियासत को नायब-ए-रियासत नामक एक अधिकारी के अधीन अलग विभाग बनाया। दीवान-ए-रियासत का प्राथमिक कार्य सुल्तान द्वारा जारी आर्थिक नियमों को लागू करना तथा बाजारों और कीमतों को नियंत्रित करना था। हर व्यापारी बाजार विभाग के तहत पंजीकृत था। दीवान-ए-रिसालत धार्मिक मामलों का विभाग था।	मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि विभाग, दीवान-ए- कोही की स्थापना की। उन्होंने एक योजना आरंभ की जिसके तहत किसानों को बीज खरीदने और खेती का विस्तार करने के लिए तकावी ऋण (खेती के लिए ऋण) दिया गया।	फिरोज शाह तुगलक ने शाही कारखाने विकसित किए, जिनमें हजारों दासों को काम पर रखा गया था, जिन्हें दीवान-ए-बंदगान (दासों का विभाग) के तहत आयोजित किया गया था। प्रभारी -अधिकारी वक़ील-ए-दर थे। अनाथों और विधवाओं की देखभाल के लिए दीवान-ए-खैरात (धर्मार्थ विभाग) नामक एक नया विभाग बनाया गया था।

Q.5) निम्नलिखित में से किस दिल्ली सुल्तान ने खलीफा से मंसूर (*mansur*), अनुमति पत्र प्राप्त किया था?

1. इल्तुतमिश
2. बलबन
3. अलाउद्दीन खिलजी
4. मुहम्मद बिन तुगलक
5. फिरोज शाह तुगलक

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1, 2 और 3
b) केवल 2, 3 और 4
c) केवल 1, 4 और 5
d) केवल 3, 4 और 5

Q.5) Solution (c)

- दिल्ली सल्तनत अपने धर्म इस्लाम के साथ एक इस्लामिक राज्य था। सुल्तानों ने स्वयं को खलीफा का प्रतिनिधि माना। उन्होंने खुतबों या प्रार्थना में खलीफा का नाम शामिल किया तथा इसे अपने सिक्कों पर अंकित किया।
- हालाँकि बलबन ने स्वयं को भगवान की छाया कहा, लेकिन उसने खुतबा और सिक्कों में खलीफा का नाम शामिल करने का अभ्यास जारी रखा। इल्तुतमिश, मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज तुगलक ने खलीफा से मंसूर या अनुमति पत्र प्राप्त किया था।
- इल्तुतमिश एक महान राजनेता था। उसे 1229 में अब्बासिद खलीफ़ा से मान्यता प्राप्त पत्र, मंसूर मिला था, जिसके द्वारा वह भारत का वैधानिक संप्रभु शासक बन गया था।

Q.6) अमीर खुसरो के योगदान के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. उन्होंने हिंदू और ईरानी प्रणालियों के सम्मिश्रण द्वारा क़व्वाली (*qawwalis*) के रूप में जाने जाने वाले हल्के संगीत की एक नई शैली विकसित की।
2. उन्होंने फ़ारसी कविता की एक नई शैली का निर्माण किया जिसे सबक-ए-हिंद कहा जाता है।
3. उनका कार्य तुगलकनामा, ग़यासुद्दीन तुगलक के उदय से संबंधित है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.6) Solution (d)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	सत्य
अमीर खुसरो (1252-1325) ने घोरा और सनम जैसे कई नए राग प्रस्तुत किए। उन्होंने हिंदू और ईरानी प्रणालियों के सम्मिश्रण द्वारा कव्वाली के रूप में जाने जाने वाले हल्के संगीत की एक नई शैली विकसित की। सितार के आविष्कार का श्रेय भी उन्हें ही दिया गया।	अमीर खुसरो प्रसिद्ध फारसी लेखक थे और उन्होंने कई कविताएँ लिखी थीं। उन्होंने कई काव्य रूपों के साथ प्रयोग किया और फारसी कविता की एक नई शैली का निर्माण किया जिसे सबक-ए-हिंद या भारतीय शैली कहा जाता है।	उन्होंने कुछ हिंदी छंद भी लिखे। अमीर खुसरो का खजाईन-उल-फ़ुतुह अलाउद्दीन के विजय के बारे में बात करता है। उनका प्रसिद्ध कार्य तुगलकनामा ग़यासुद्दीन तुगलक के उदय से संबंधित है।

Q.7) दिल्ली सल्तनत के दौरान सिक्कों की प्रणाली के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत में बलबन ने अरबी सिक्का और चांदी का टंका प्रस्तुत किया।
2. अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान सोने के सिक्के या दीनार लोकप्रिय हुए।
3. मुहम्मद बिन तुगलक ने सोने के सिक्कों का मुद्रण बंद कर दिया और सांकेतिक मुद्रा आरंभ की।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.7) Solution (b)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	सत्य	असत्य
सिक्के की प्रणाली भी दिल्ली सल्तनत के दौरान विकसित हुई थी। इल्तुतमिश ने	दक्षिण भारतीय विजय के बाद अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में	मुहम्मद बिन तुगलक ने न केवल सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग किया था

अरबी सिक्के को भारत में प्रस्तुत किया और 175 ग्राम वजन का चांदी का टंका मध्यकालीन भारत में एक मानक सिक्का बन गया। एक चांदी का टंका खिलजी शासन के दौरान 48 जीतल और तुगलक शासन के दौरान 50 जीतल में विभाजित किया गया था। चाँदी का टंका आधुनिक रुपये का आधार बना।	सोने के सिक्के या दीनार लोकप्रिय हुए। ताँबे के सिक्के संख्या में कम और अदिनांकित थे।	बल्कि कई प्रकार के सोने और चांदी के सिक्के भी जारी किए थे। उनका आठ अलग-अलग स्थानों पर मुद्रण किया गया था। उसके द्वारा कम से कम पच्चीस प्रकार के सोने के सिक्के जारी किए गए थे।

Q.8) सूफीवाद के बारे में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?

a) सूफीवाद फारस में उत्पन्न इस्लाम के भीतर एक उदारवादी सुधार आंदोलन था।
b) सूफियों का मानना था कि मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा के समान है।
c) सूफीवाद में, एक पीर या गुरु के मार्गदर्शन को धारणा की भावना से भगवान का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक शर्त माना जाता था।
d) सूफ़ी प्रेम और भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र साधन मानते हैं।

Q.8) Solution (c)

- सूफीवाद इस्लाम के भीतर एक उदार सुधार आंदोलन था। इसकी उत्पत्ति फारस में हुई और ग्यारहवीं शताब्दी तक भारत में फैल गया था। लाहौर के पहले सूफी संत शेख इस्माइल ने अपने विचारों का प्रचार आरंभ किया। भारत के सूफी संतों में सबसे प्रसिद्ध ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती थे, जो अजमेर में बस गए थे जो उनकी गतिविधियों का केंद्र बन गया था।
- सूफीवाद ने प्रेम और भक्ति के तत्वों को भगवान की प्राप्ति के प्रभावी साधन के रूप में बल दिया। ईश्वर के प्रेम का अर्थ मानवता का प्रेम था और इसलिए सूफियों का मानना था कि मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा के लिए समान है।
- सूफीवाद में, आत्म अनुशासन को धारणा की भावना से भगवान का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक शर्त माना जाता था। उनके अनुसार किसी के पास एक पीर या गुरु का मार्गदर्शन होना चाहिए, जिसके बिना आध्यात्मिक विकास असंभव है। सूफीवाद ने भी अपने अनुयायियों में सहिष्णुता की भावना पैदा की। इसलिए विकल्प (c) गलत है।
- जबकि रूढ़िवादी मुसलमान बाह्य आचरण पर जोर देते हैं, सूफी लोग आंतरिक शुद्धता पर जोर देते हैं। रूढ़िवादी संस्कारों के अंध पालन में विश्वास करते हैं, जबकि सूफी प्रेम और भक्ति को मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र साधन मानते हैं।
- सूफीवाद की इन उदार और गैर-कट्टरवादी विशेषताओं का मध्यकालीन भक्ति संतों पर गहरा प्रभाव था। जब भारत में सूफी आंदोलन लोकप्रिय हो रहा था, उसी समय भक्ति पंथ हिंदुओं के मध्य दृढ़ता प्राप्त कर रहा था। प्रेम और निस्वार्थ भक्ति के सिद्धांतों पर आधारित दो समानांतर आंदोलनों ने दोनों समुदायों को एक साथ लाने में बहुत योगदान दिया। हालांकि, यह प्रवृत्ति लंबे समय तक नहीं चली।

Q.9) गुरु नानक के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वह निर्गुण भक्ति संत और समाज सुधारक थे।
2. उन्होंने सिख धर्म के पवित्र धार्मिक ग्रंथ आदि ग्रन्थ का संकलन किया।
3. वह मुगल सम्राट बाबर के समकालीन थे।
4. उन्होंने एक मध्य मार्ग की वकालत की जिसमें आध्यात्मिक जीवन को गृहस्थ के कर्तव्यों के साथ जोड़ा जा सके।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 4
d) केवल 1, 3 और 4

Q.9) Solution (d)

कथन 1	कथन 2	कथन 3	कथन 4
सत्य	असत्य	सत्य	सत्य
गुरु नानक देव (1469 – 1539 ई.) सिख धर्म के पहले सिख गुरु और संस्थापक थे। वह निर्गुण भक्ति संत और समाज सुधारक थे। उनका जन्म 1469 में तलवंडी (जिसका नाम बाद में ननकाना साहिब रखा गया था) लाहौर के पास हुआ था। वे जाति के सभी विभेदों के साथ-साथ धार्मिक प्रतिद्वंद्विता और कर्मकांडों के भी विरोधी थे, तथा उन्होंने ईश्वर की एकता का प्रचार किया और औपचारिकता और कर्मकांड की निंदा की।	उन्होंने लंगर (एक सामुदायिक रसोई) की अवधारणा प्रस्तुत की। आदि ग्रंथ यानी गुरु ग्रंथ साहिब गुरु अर्जुन देव (5 वें सिख गुरु) द्वारा संकलित सिख धर्म की पवित्र धार्मिक पुस्तक है।	गुरु नानक देव (1469 – 1539 ई.) मुगल सम्राट बाबर (1526 - 1530) के समकालीन थे।	उन्होंने चरित्र की पवित्रता और आचरण पर बहुत जोर दिया, मार्गदर्शन के लिए भगवान, और गुरु की आवश्यकता को पहली शर्त माना। कबीर की तरह, उन्होंने एक मध्य मार्ग की वकालत की जिसमें आध्यात्मिक जीवन को गृहस्थ के कर्तव्यों के साथ जोड़ा जा सकता है। मुक्ति का उनका विचार जड़ता आनंद की स्थिति का नहीं था, बल्कि सामाजिक प्रतिबद्धता की एक मजबूत भावना के साथ सक्रिय जीवन की खोज था।

Q.10) इबादत खाना के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह अकबर द्वारा धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा करने के लिए स्थापित किया गया था।
2. इसे मुस्लिमों, हिंदुओं, ईसाइयों और पारसियों के लिए खोला गया था।
3. औरंगज़ेब के शासनकाल के दौरान इबादत ख़ाना में वाद-विवाद बंद कर दिया गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1
c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q.10) Solution (a)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	असत्य
1575 में, अकबर ने फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना नामक प्रार्थना का एक हॉल बनाया। उन्होंने धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर बहस करने के लिए केवल चयनित विद्वानों और धर्मशास्त्रियों को बुलाया। 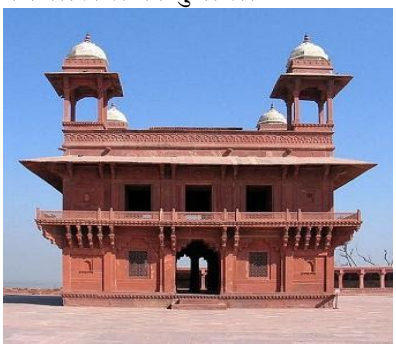	प्रारंभ में केवल मुस्लिम मौलवियों को बहस के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन उनके द्वारा बनाई गई अव्यवस्था ने बादशाह अकबर को अपमानित किया। बाद में उन्होंने इसे हिंदुओं से संबंधित विभिन्न संप्रदायों, ईसाइयों और पारसियों के लिए खोल दिया।	लेकिन सभी धर्मों के विद्वानों द्वारा बनाई गई अव्यवस्था के कारण अकबर ने सोचा कि बहस से विभिन्न धर्मों के बीच बेहतर समझ पैदा नहीं हुई है, लेकिन महान कटुता के रूप में, प्रत्येक धर्म के प्रतिनिधियों ने दूसरों को बदनाम किया है तथा अपने धर्म को दूसरों से बेहतर साबित करने की कोशिश की है। इसलिए, 1582 में, अकबर ने इबादत खाना में वाद-विवाद बंद कर दिया था।

Q.11) निम्नलिखित में से किसने भागवत गीता और उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद किया था?

a) अबुल फैजी
b) अब्दुल हमीद लाहौरी
c) दारा शिकोह
d) इनायत खान

Q.11) Solution (c)

- दारा शिकोह, मुगल सम्राट शाहजहाँ का सबसे बड़ा पुत्र था, जिसने 1642 में, दारा शिकोह को औपचारिक रूप से अपने उत्तराधिकारी की पुष्टि की, उसे शहजादा-ए-बुलंद इकबाल की उपाधि प्रदान की।
- वह अपने भाई औरंगजेब के खिलाफ उत्तराधिकार का युद्ध हारने के बाद मारा गया था।
- उन्होंने 1657 में भगवद् गीता के साथ-साथ उपनिषदों का अपने मूल संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया ताकि मुस्लिम विद्वानों द्वारा उनका अध्ययन किया जा सके।
- फारसी भाषा में महाभारत का अनुवाद अबुल फैजी की देखरेख में किया गया था।
- अब्दुल हमीद लाहौरी, पादशाह नामा के लेखक और इनायत खान ने शाहजहाँ नामा लिखा था।

Q.12) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

मुग़ल प्रशासन के अंतर्गत पद	प्राथमिक कार्य / भूमिका
1. मुतसद्दी (*Mutasaddi*)	बंदरगाह का गवर्नर
2. शिकदार (*Shiqdar*)	सरकार इकाई में कार्यकारी अधिकारी

3. मुहतसिब (*Muhtasibs*)	लोगों के आचरण पर नजर रखना

ऊपर दी गई कौन सी जोड़ी गलत तरीके से मेल खाती है?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) केवल 1 और 2

Q.12) Solution (b)

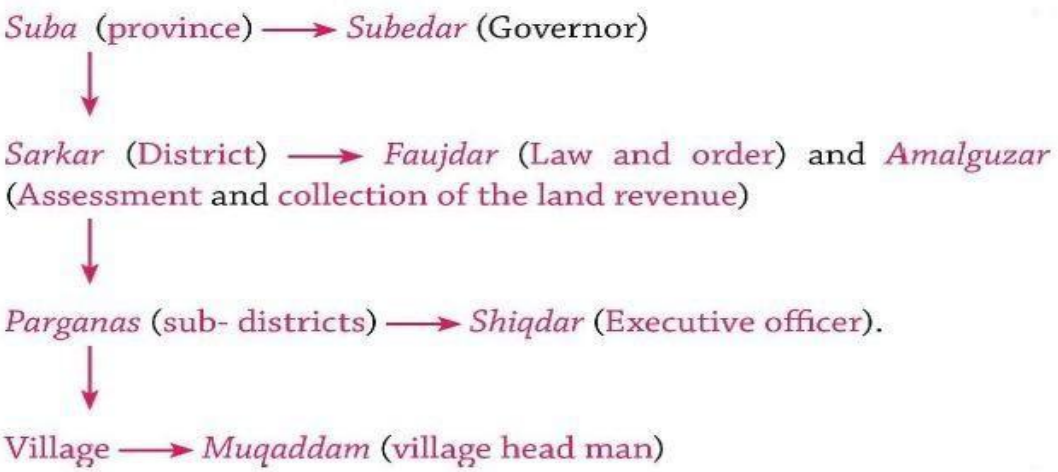

- फौजदार का प्राथमिक कर्तव्य कानून और व्यवस्था बनाए रखना तथा क्षेत्रों के निवासियों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा करना था। जब भी बल की आवश्यकता होती थी, वह राजस्व के समय पर संग्रह में सहायता करता था।
- अमालगुजार या आमिल राजस्व संग्रहकर्ता थे। उनका कर्तव्य राजस्व संग्रह का आकलन और पर्यवेक्षण करना था।

युग्म 1	युग्म 2	युग्म 3
सत्य	**असत्य**	**सत्य**
बंदरगाह प्रशासन प्रांतीय प्राधिकरण से स्वतंत्र था। बंदरगाह के गवर्नर को मुतसद्दी कहा जाता था जो सीधे सम्राट द्वारा नियुक्त किया जाता था। मुतसद्दी ने माल पर कर एकत्र किया और एक सीमा शुल्क गृह बनाए रखा। उन्होंने बंदरगाह पर टकसाल गृह की भी देखरेख की।	परगना के स्तर पर, शिक़दार कार्यकारी अधिकारी थे। उन्होंने राजस्व संग्रह के कार्य में आमिल की सहायता की थी। कानूनगो ने परगना में जमीन के सभी रिकॉर्ड रखे थे। कोतवाल मुख्य रूप से शाही सरकार द्वारा कस्बों में नियुक्त किए जाते थे और कानून व्यवस्था के प्रभारी थे।	नैतिकता के नियमों के सामान्य पालन को सुनिश्चित करने के लिए अकबर द्वारा मुहतासिब (सार्वजनिक नैतिकता के रक्षक) भी नियुक्त किए गए थे।

Q.13) भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, 'हम्ज़ानामा' का संबंध किससे है

a) मुगल प्रशासन का वर्णन।
b) लघु चित्रों का संग्रह।
c) हुमायूँ की आत्मकथा।
d) मुगल राजाओं द्वारा जारी शाही आदेश।

Q.13) Solution (b)

- हम्ज़ानामा 1200 लघु चित्रों का एक संग्रह है तथा तीसरे मुगल सम्राट अकबर द्वारा प्राथमिक महत्वपूर्ण कार्यों में से एक था।
- यह पैगंबर मोहम्मद के चाचा अमीर हम्ज़ा के कारनामों की कहानी कहता है। इन्हें कागज के बजाय सूती कपड़े पर चित्रित किया गया था। इस लघु चित्रों में यह देख सकते हैं कि वास्तुकला इंडो-फ़ारसी है, पेड़ के प्रकार मुख्य रूप से दक्कनी चित्रकला से प्राप्त होते हैं और महिला प्रकार आरंभिक राजस्थानी चित्रों से अनुकूलित होते हैं, महिलाएं चौकोर किनारे वाली स्कर्ट और पारदर्शी मुस्लिम घूंघट पहनती हैं। पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले टर्बन्स छोटे और तंग होते हैं, जो अकबर काल के विशिष्ट हैं।
- मुगल शैली आगे चलकर यूरोपीय चित्रों से प्रभावित हुई, जो मुगल दरबार में आई, और कुछ पश्चिमी तकनीक जैसे छायांकन और परिप्रेक्ष्य को समाहित किया। उनका उत्पादन अकबर के चित्रालय के लिए एक बहुत बड़ा उपक्रम था, जिसमें अब्द अल-समद और मीर सैय्यद अली सहित कई प्रख्यात फारसी कलाकार कार्यरत थे।

Q.14) इतिमाद उद दौला के मकबरे के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका निर्माण आगरा में मुगल सम्राट शाहजहाँ द्वारा किया गया था।
2. यह भारत में पहले मकबरे के रूप में प्रसिद्द है, जो पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बनाया गया है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा गलत है / हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) न तो 1 और न ही 2

Q.14) Solution (a)

कथन 1	कथन 2
असत्य	सत्य
इतिमाद उद दौला के मकबरे का निर्माण मुगल रानी नूरजहाँ ने 1622 और 1628 के बीच करवाया था, जहाँ उसके पिता इतिमाद उद दौला को दफनाया गया था। इतिमद उद दौला या मिर्जा गियास-उद-दीन या गियास बेग मुगल रानी और जहांगीर की पत्नी नूरजहाँ के पिता थे।	यह भारत में पूरी तरह से सफेद संगमरमर से निर्मित होने वाला संपूर्णता में पहला मकबरा होने के लिए प्रसिद्ध है। यह इस्लामी वास्तुकला का एक आदर्श उदाहरण है; मकबरे में धनुषाकार प्रवेश द्वार, अष्टकोणीय आकार के मीनारें, अति सुंदर नक्काशीदार पुष्प पैटर्न का उपयोग, जटिल संगमरमर-स्क्रीन का काम और जड़ने का कार्य हुआ है। 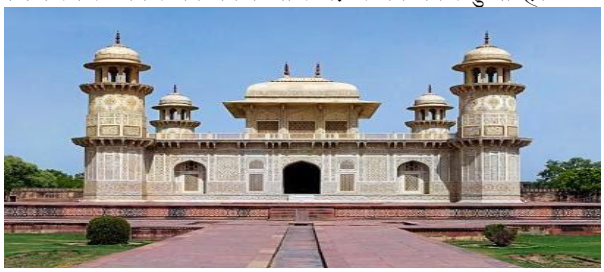

Q.15) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. मुगल चित्रकला जहाँगीर के शासनकाल के दौरान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी थी।
2. किले के निर्माण का चरमोत्कर्ष अकबर के शासनकाल के दौरान पहुंचा था।

3. शाहजहाँ के शासनकाल में मस्जिद-निर्माण अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.15) Solution (c)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	असत्य	सत्य
मुगल चित्रकला जहाँगीर के शासनकाल के दौरान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची। उन्होंने अबुल हसन, बिशन दास, मधु, अनंत, मनोहर, गोवर्धन और उस्ताद मंसूर जैसे कई चित्रकारों को नियुक्त किया।	किले-निर्माण का चरमोत्कर्ष शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान पहुँचा। दिल्ली का प्रसिद्ध लाल किला अपने रंग महल, दीवान-ए-आम और दीवान-ए-ख़ास के साथ था। उन्होंने दिल्ली में जामा मस्जिद, लाहौर में शालीमार बाग और शाहजहानाबाद शहर का निर्माण भी किया। मयूर सिंहासन के निर्माण भी करवाया, जो अमीर ख़ुसरो के दोहे अंकित पर आधारित हैं: "यदि धरती पर स्वर्ग है, तो वह यहाँ है"।	शाहजहाँ के शासनकाल में मस्जिद-निर्माण अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था। उन्होंने आगरा में ताजमहल और मोती मस्जिद (पूरी तरह से सफेद संगमरमर में निर्मित), शीश महल और आगरा में मुसम्मन बुर्ज (जहाँ उन्होंने अपने अंतिम वर्ष कैद में बिताए थे) का निर्माण किया, जबकि दिल्ली में जामा मस्जिद लाल पत्थर से बनी थी।

Q.16) विजयनगर साम्राज्य के कृष्ण देव राय के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. उनके दरबार में नवरत्नों के रूप में जाने जाने वाले साहित्यकारों में नौ प्रतिष्ठित साहित्यकार थे।
2. वे स्वयं एक संस्कृत कार्य, आमुक्तमाल्यद तथा एक तेलुगु कार्य, जांबवती कल्याणम के लेखक थे।
3. बड़ी संख्या में रायगोपुरम के निर्माण के अलावा, उन्होंने एक नया शहर भी बनाया जिसका नाम नागालपुरम था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 2 और 3
d) केवल 1 और 3

Q.16) Solution (b)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	असत्य	सत्य
कृष्ण देव राय (1509 - 1530), हालांकि एक वैष्णव थे, उन्होंने सभी	अल्लासानी पेद्दन्ना सबसे महान थे और उन्हें आंध्रकविता पितामह कहा	उन्होंने दक्षिण भारत के अधिकांश मंदिरों की मरम्मत करवाई। उन्होंने

धर्मों का सम्मान किया। वह साहित्य और कला के महान संरक्षक थे तथा उन्हें आंध्र भोज के नाम से जाना जाता था। अष्टदिग्गजों के नाम से प्रसिद्ध आठ विद्वान उनके शाही दरबार में थे। नौ नवरत्न अकबर के दरबार में थे और कृष्ण देव राय के दरबार में नहीं।	जाता था। उनके महत्वपूर्ण कार्यों में मनुचरितम और हरिकथासरम शामिल हैं। पिंगल सुरन्ना और तेनाली रामकृष्ण अन्य महत्वपूर्ण विद्वान थे। कृष्णदेव राय ने स्वयं एक तेलुगु कार्य, आमुक्त माल्यद तथा संस्कृत रचनाएँ, जाम्बवती कल्याणम और उषापरिनयम लिखी हैं।	विजयनगर में प्रसिद्ध विट्ठलस्वामी और हजारा रामास्वामी मंदिरों का भी निर्माण करवाया। उन्होंने अपनी रानी नागलदेवी की याद में एक नया शहर भी बनाया, जिसका नाम नागालपुरम था। इसके अलावा, उन्होंने बड़ी संख्या में रायगोपुरम का निर्माण भी करवाया।

Q.17) विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत प्रशासन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. प्रांतीय गवर्नरों के पास स्वायत्तता का एक बड़ा अधिकार था।
2. भूमि राजस्व आम तौर पर उपज का एक-छठां भाग तय किया गया था।
3. विजयनगर शासकों के अधीन, ग्राम स्वशासन की चोल परंपराओं को काफी कमजोर कर दिया गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.17) Solution (d)

- विजयनगर साम्राज्य के तहत एक सुव्यवस्थित प्रशासन था। राय (राजा) को कार्यकारी, न्यायिक और विधायी मामलों में पूर्ण अधिकार प्राप्त था। वह अपील का सर्वोच्च न्यायालय था। न्याय के मामले में, अंग-भंग और हाथियों से रौदने जैसे कठोर दंड दिए गए थे। राजा को अपने दैनिक प्रशासन में मंत्रियों की एक परिषद द्वारा सहायता प्रदान की गई थी।
- राज्य को विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित किया गया था, जिन्हें मंडलम, नाडु, स्थल और अंत में ग्रामों में विभाजित किया गया था।

कथन 1	**कथन 2**	**कथन 3**
सत्य	**सत्य**	**सत्य**
प्रांतों के गवर्नर पहले शाही राजकुमार होते थे। बाद में, शासक परिवारों और कुलीनों के जागीर से संबंधित व्यक्तियों को भी गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया था। प्रांतीय गवर्नरों के पास स्वायत्तता का एक बड़ा अधिकार था क्योंकि उन्होंने अपने दरबारों में अपने स्वयं के अधिकारियों को नियुक्त किया, और अपनी सेनाओं को बनाए रखा। कभी-कभी, उन्होंने अपने स्वयं के सिक्के भी जारी किए (हालांकि छोटे मूल्यवर्ग में)।	भूमि राजस्व, श्रद्धांजलि तथा जागीरदार और सामंती प्रमुखों से उपहार के अलावा, बंदरगाहों पर एकत्र किए गए सीमा शुल्क, विभिन्न व्यवसायों पर कर, सरकार की आय के अन्य स्रोत थे। भूमि राजस्व आम तौर पर उपज का एक छठा भाग तय किया गया था।	मंडलम के गवर्नर को मंडलेश्वर या नायक कहा जाता था। विजयनगर शासकों ने प्रशासन में स्थानीय अधिकारियों को पूर्ण अधिकार दिए। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि विजयनगर शासकों के अधीन ग्राम स्व-शासन की चोल परंपराएँ काफी कमजोर हो गयी थीं। उनकी स्वतंत्रता और पहल पर अंकुश लगाने के लिए वंशानुगत नायक प्रथा में वृद्धि हुई थी।

Q.18) पेशवा बाजी राव प्रथम के बारे में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?

a) वह शिवाजी के बाद गुरिल्ला रणनीति के सबसे बड़े प्रतिपादक थे।
b) उन्होंने मराठा प्रमुखों के बीच संघ की व्यवस्था (system of confederacy) आरंभ की।
c) उनके शासनकाल के दौरान, छत्रपति से सर्वोच्च शक्ति पेशवा को हस्तांतरित की गई थी।
d) उन्होंने पुर्तगालियों से साल्सेट और बसीन को छीन लिया था।

Q.18) Solution (c)

- बाजी राव प्रथम (1720–1740 ई.) बालाजी विश्वनाथ के सबसे बड़े पुत्र थे, जिन्होंने उन्हें पेशवा के रूप में सफलता दिलाई। वह शिवाजी के बाद गुरिल्ला रणनीति के सबसे बड़े प्रतिपादक थे। अपने जीवनकाल के दौरान, उन्होंने कभी भी एक लड़ाई नहीं हारी और मराठा शक्ति उनके अधीन अपने चरम पर पहुंच गई। उन्होंने उत्तर-पूर्व विस्तार की नीति तैयार की।
- उन्होंने आम दुश्मन, मुगलों के खिलाफ हिंदू प्रमुखों के समर्थन को सुरक्षित करने के लिए हिंदू-पादशाही (हिंदू साम्राज्य) के विचार का प्रचार किया और लोकप्रिय बनाया। दक्कन में उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी निज़ाम-उल-मुल्क थे, जिन्होंने बाजी राव और शाहू के खिलाफ कोल्हापुर के राजा के साथ लगातार साजिश रची। हालाँकि, बाजी राव ने निज़ाम को दोनों ही मौकों पर हराया, जब वे पालखेड़ और भोपाल में लड़े, तथा उन्हें दक्खन के छह प्रांतों के चौथ और सरदेशमुखी देने के लिए मजबूर किया।
- 1722 ई. में, उन्होंने साल्सेट और बसीन को पुर्तगालियों से छीन लिया। उन्होंने 1728 ई. में प्रशासनिक राजधानी को सतारा से पुणे स्थानांतरित कर दिया।
- उन्होंने मराठा प्रमुखों के बीच संघ की व्यवस्था शुरू की। इस प्रणाली के तहत, प्रत्येक मराठा प्रमुख को एक क्षेत्र सौंपा गया था जिसे स्वायत्त रूप से प्रशासित किया जा सकता था। परिणामस्वरूप, कई मराठा परिवार प्रमुख हो गए और भारत के विभिन्न हिस्सों में अपना अधिकार स्थापित कर लिया। वे बड़ौदा में गायकवाड़, नागपुर में भोंसले, इंदौर में होल्कर, ग्वालियर में सिंधिया और पूना में पेशवा थे।
- बालाजी बाजी राव प्रथम / नाना साहिब प्रथम (1740-61 ई.) के शासनकाल के दौरान, राजा राम ने संगोला समझौते (जिसे 1750 की संवैधानिक क्रांति के रूप में भी जाना जाता है) को अंजाम दिया, जिसे सर्वोच्च शक्ति छत्रपति को पेशवा में स्थानांतरित कर दिया गया था। इसलिए विकल्प (c) गलत है।

Q.19) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

उत्तराधिकारी राज्य	संस्थापक
1. हैदराबाद	चिन किलिच खान
2. अवध	सआदतुल्ला खान
3. बंगाल	मुर्शिद कुली खान

ऊपर दिए गए युग्मों में से, कौन सा सही तरीके से सुमेलित है?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 1
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.19) Solution (a)

- मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, 18 वीं शताब्दी में उत्तराधिकारी राज्यों का उदय हुआ। मुगल प्रांतों के गवर्नरों द्वारा स्वायत्तता के दावे के परिणामस्वरूप वे मुगल साम्राज्य से अलग हो गए। ये थे हैदराबाद, बंगाल और अवध।

युग्म 1	युग्म 2	युग्म 3
सत्य	सत्य	सत्य
निज़ाम-उल-मुल्क आसफ़ जाह (1724-48): हैदराबाद राज्य की स्थापना 1724 में तुरानी समूह के एक शक्तिशाली कुलीन, क़मर-उद-दीन-सिद्दीकी ने की थी। वह अपनी उपाधि चिन किलिच खान (सम्राट औरंगजेब द्वारा सम्मानित), निजाम-उल-मुल्क (फर्रुखसियर द्वारा सम्मानित) और आसफ जाह (मोहम्मद शाह द्वारा सम्मानित) द्वारा भी जाना जाता है।	मुर्शिद कुली खान (1717-27): बंगाल के स्वतंत्र राज्य की स्थापना मुर्शिद कुली खान ने की थी, जिसे मोहम्मद हादी के नाम से भी जाना जाता है। बंगाल के साथ मुर्शिद कुली का संबंध 1700 में आरंभ हुआ, जब औरंगज़ेब ने बंगाल को दीवान के रूप में भेजा, जहाँ वे सफल राजस्व प्रशासक साबित हुए।	सआदत खान (1722-39) अवध के स्वतंत्र राज्य के संस्थापक थे। 1722 में उन्हें मुगल सम्राट द्वारा अवध का गवर्नर नियुक्त किया गया था। सूबे में विद्रोह करने वाले ज़मींदारों को वश में करने का कठिन काम उन्हें दिया गया था। उन्होंने भूमि कर का भुगतान करने से इनकार कर दिया था और अपने किलों और सेनाओं के साथ स्वायत्त प्रमुखों की तरह व्यवहार किया था। वह एक वर्ष के भीतर इस कार्य में सफल रहा और प्रशंसा में, सम्राट मोहम्मद शाह ने उसे बुरहान-उल-मुल्क की उपाधि से सम्मानित किया। सादतुल्ला खान कर्नाटक का नवाब था।

Q.20) ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा प्राप्त निम्नलिखित में से कौन सी विशेषाधिकार कंपनी के लिए मैग्ना कार्टा के रूप में माना जाता है?

a) मुगल सम्राट जहांगीर और चंद्रगिरी के शासक द्वारा कारखानों को स्थापित करने की अनुमति।
b) गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा कंपनी को जारी किया गया 'स्वर्णिम फरमान'
c) सूबेदार ने सभी शुल्कों के स्थान पर, 3,000 रुपये के वार्षिक भुगतान के बदले बंगाल में व्यापार करने की अनुमति दी।
d) मुगल बादशाह फर्रुखसियर द्वारा जारी किए गए तीन फरमान।

Q.20) Solution (d)

- 1715 में, मुग़ल सम्राट फ़र्रुखसियर के दरबार में जॉन सरमन के नेतृत्व में एक अंग्रेजी मिशन ने तीन प्रसिद्ध फरमान हासिल किए, जिससे कंपनी को बंगाल, गुजरात और हैदराबाद में कई मूल्यवान विशेषाधिकार मिले। इस प्रकार प्राप्त फरमानों को कंपनी का मैग्ना कार्टा माना जाता था।
- उनकी महत्वपूर्ण शर्तें थीं:
    - बंगाल में, कंपनी के आयात और निर्यात को अतिरिक्त सीमा शुल्क से छूट दी गई थी, जिसमें केवल भुगतान किए गए 3,000 रुपये के वार्षिक भुगतान को करना था।
    - कंपनी को इस तरह के माल के परिवहन के लिए दस्तक (पास) जारी करने की अनुमति दी गई थी।
    - कंपनी को कलकत्ता के आसपास अधिक भूमि किराए पर लेने की अनुमति दी गई थी।
    - हैदराबाद में, कंपनी ने व्यापार में शुल्कों से स्वतंत्रता के अपने मौजूदा विशेषाधिकार को बरकरार रखा और केवल मद्रास के लिए प्रचलित किराए का भुगतान करना पड़ा।
    - सूरत में, 10,000 रुपये के वार्षिक भुगतान के लिए, ईस्ट इंडिया कंपनी को सभी शुल्कों के भुगतान से छूट दी गई थी।
    - यह फरमान था कि मुम्बई साम्राज्य में कंपनी के सिक्कों का चलन पूरे मुगल साम्राज्य में लागू था।

Q.21) सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. हड़प्पावासियों द्वारा उत्पादित कपास को यूनानियों द्वारा 'सिंधन' (*Sindon*) के रूप में जाना जाता था।
2. प्रचलन में कोई धात्विक मुद्रा नहीं थी तथा व्यापार वस्तु विनिमय के माध्यम से आयोजित किया गया था।
3. हड़प्पा वासियों ने बड़े पैमाने पर पशुओं को पालतू बनाया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.21) Solution (d)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	सत्य
हड़प्पा सभ्यता कपास का उत्पादन करने वाली सबसे पहले ज्ञात सभ्यता थी। यह यूनानियों द्वारा सिंध क्षेत्र में होने के कारण 'सिंधन' के रूप में जाना जाता है। सिंधु मैदान में, लोगों द्वारा नवंबर में बाढ़ के मैदानों में बीज बोए जाते थे, जब बाढ़ का पानी वापस चला जाता था, अगले बाढ़ के आगमन से पहले अप्रैल में गेहूं और जौ की अपनी फ़सल काट ली जाती थी।	हड़प्पा व्यापार नेटवर्क और अर्थव्यवस्था के प्रमुख पहलू - उन्होंने आंतरिक और बाह्य व्यापार किया। प्रचलन में कोई धात्विक मुद्रा नहीं थी तथा व्यापार वस्तु विनिमय के माध्यम से आयोजित किया गया था। अंतर्देशीय परिवहन मुख्य रूप से बैलगाड़ी द्वारा किया जाता था।	हड़प्पा वासियों ने बड़े पैमाने पर पशुओं को पालतू बनाया। मवेशियों (बैल, भैंस, बकरी, कूबड़ वाले बैल, भेड़, सूअर, गधे, ऊंट) के अलावा, बिल्लियों और कुत्तों को भी पालतू बनाया गया था। घोड़े को नियमित रूप से इस्तेमाल नहीं किया गया था लेकिन हड़प्पावासी हाथी और गैंडे से अच्छी तरह से परिचित थे। यह ध्यान रखना उचित है कि

उन्होंने स्वयं की आवश्यकता हेतु पर्याप्त खाद्यान्न का उत्पादन किया और अधिशेष खाद्यान्न को अन्न भंडार में रखा जाता था।		हड़प्पा संस्कृति घोड़े पर केंद्रित नहीं थी।

Q.22) भारत में धार्मिक प्रथाओं के संदर्भ में, "मुर्तिपुजक" (Murtipujaka) संप्रदाय किससे संबंधित हैं

a) बौद्ध धर्म
b) जैन धर्म
c) वैष्णव धर्म
d) शैव धर्म

Q.22) Solution (b)

- जैन धर्म संसार के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है। जैन धर्म को श्रमण धर्म, निर्ग्रंथ धर्म आदि के रूप में भी जाना जाता था, यह किसी अन्य धर्म की शाखा नहीं है, बल्कि अलग-अलग समयों के दौरान इन विभिन्न नामों से पहचाना जाने वाला एक स्वतंत्र धर्म है।
- इनके तीर्थंकरों ने जिन भी कहा है। एक जिन के अनुयायी को जैन कहा जाता है और जिन के अनुयायियों के नाम पर धर्म को जैन धर्म कहा जाता है। प्रत्येक तीर्थंकर जैन क्रमिक व्यवस्था को पुनर्जीवित करता है। जैन व्यवस्था को जैन संघ के नाम से जाना जाता है। वर्तमान जैन संघ को भगवान महावीर द्वारा पुन: स्थापित किया गया था, जो वर्तमान समय अवधि के 24 वें और अंतिम तीर्थंकर थे।
- जैन व्यवस्था दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित थी- दिगंबर संप्रदाय और श्वेतांबर संप्रदाय।
- दिगंबर संप्रदाय, हाल के शताब्दियों में, निम्नलिखित उप-संप्रदायों में विभाजित हो गया है:

प्रमुख उप-संप्रदाय:

1. बिसपंथ (Bisapantha)
2. तेरापंथ (Terapantha)
3. तरणपंथ या समयपंथ (Taranapantha or Samaiyapantha)

लघु उप संप्रदाय:

1. गुमनपंथ (Gumanapantha)
2. तोतापंथ (Totapantha)

दिगंबर संप्रदाय की तरह, श्वेतांबर संप्रदाय को भी तीन मुख्य उप-संप्रदायों में विभाजित किया गया है:

1. **मूर्तिपूजक (Murtipujaka),**
2. स्थानकवासी (Sthanakvasi), और
3. तेरापंथी (Terapanthi)

Q.23) त्रिपिटक के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. विनय पिटक में संघ के भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए नियम थे।
2. सुत्त पिटक में संवाद रूप में विभिन्न सिद्धांत संबंधी मुद्दों पर बुद्ध के प्रवचन शामिल हैं।
3. अभिधम्म पिटक ग्रंथों को 'बुद्धवचन' या 'बुद्ध के शब्द' के रूप में भी जाना जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2

c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.23) Solution (a)

- बौद्ध धर्म की सभी शाखाओं में उनके मुख्य धर्मग्रंथों के हिस्से के रूप में त्रिपिटक है, जिसमें तीन पुस्तकें हैं - सुत्त (पारंपरिक शिक्षण), विनय (अनुशासनात्मक संहिता), और अभिधम्म (नैतिक मनोविज्ञान)।

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	असत्य
विनय पिटक (अनुशासनात्मक टोकरी): इसमें संन्यासी के भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए नियम (संघ) हैं। इसमें पत्तिमोक्ख भी शामिल है - इनके लिए मठवासी अनुशासन और प्रायश्चितों के विरुद्ध पापों की एक सूची है। संन्यासी नियमों के अलावा, विनय ग्रंथों में सिद्धांतवादी अनुष्ठान, अनुष्ठान ग्रंथ, जीवनी कथाएँ, और 'जातक' या 'जन्म कथाओं' के कुछ तत्व शामिल हैं।	सुत्त पिटक (प्रवचन सूत्र / टोकरी): सुत्त पिटक में संवाद रूप में विभिन्न सिद्धांत संबंधी मुद्दों पर बुद्ध के प्रवचन शामिल हैं, क्योंकि यह उन ग्रंथों को संदर्भित करता है जिनमें माना जाता है कि बुद्ध ने स्वयं कहा था। कुछ सूत्र के अपवाद के साथ, इस पाठ का अधिकार सभी बौद्ध स्कूलों द्वारा स्वीकार किया जाता है। इन प्रवचनों को उस तरीके के आधार पर व्यवस्थित किया गया था जिसमें उन्हें वितरित किया गया था।	अभिधम्म पिटक (उच्च शिक्षण की टोकरी): इसमें सारांश, प्रश्न और उत्तर, सूची आदि के माध्यम से सुत्त पिटक की शिक्षाओं का गहन अध्ययन और व्यवस्था शामिल है।

Q.24) महायान बौद्ध धर्म की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार करें:

1. बुद्ध की व्याख्या एक पारलौकिक व्यक्ति के रूप में की गई थी, जो सभी बनने की आकांक्षा कर सकते थे।
2. यह बुद्ध की स्वर्गिकता (heavenliness) में विश्वास रखता है, न कि बुद्ध की मूर्ति पूजा में।
3. बोधिसत्व की अवधारणा बौद्ध धर्म के इस संप्रदाय के तहत विकसित की गई है।

ऊपर दी गई कौन सी विशेषताएँ सही हैं / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.24) Solution (c)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	असत्य	सत्य

महायान एक दार्शनिक आंदोलन है जिसने सार्वभौमिक मोक्ष की संभावना की घोषणा की है, जो अनुयायियों को करुणामय प्राणियों के रूप में सहायता प्रदान करता है जिन्हें बोधिसत्व कहा जाता है। इसका लक्ष्य सभी प्राणियों के लिए बुद्धत्व (बुद्ध बनना) की संभावना को खोलना था। बुद्ध केवल एक ऐतिहासिक व्यक्ति बनकर रह गए, बल्कि एक पारलौकिक व्यक्ति के रूप में व्याख्या की गई, जो सभी बनने की आकांक्षा कर सकते थे।	महायान या "महान वाहन" बुद्ध के बुद्धत्व और बुद्ध की मूर्ति की पूजा तथा बोधिसत्व को बुद्ध प्रकृति का प्रतीक मानते हैं।	महायान विचारधारा का केंद्र बोधिसत्व का विचार है, जो बुद्ध बनना चाहता है। गैर-महायान बौद्ध धर्म में प्रमुख विचार के विपरीत, जो इनके प्रबोधन (बोधी), या ज्ञानोदय से प्रथम बुद्ध को बोधिसत्व के पद तक सीमित करता है, महायान कहता है कि कोई भी ज्ञान/ प्रबोधन प्राप्त करने की आकांक्षा रख सकता है और जिससे वह बोधिसत्व बन जाता है। बोधिसत्व की अवधारणा बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के तहत विकसित की गई है।

Q.25) प्रसिद्ध सुल्तानगंज बुद्ध, भारतीय मूर्तिकला के निम्नलिखित में से किस स्कूल से संबंधित है?

a) मथुरा स्कूल
b) गांधार स्कूल
c) अमरावती स्कूल
d) सारनाथ स्कूल

Q.25) Solution (d)

- मूर्तिकला के सारनाथ स्कूल का एक उल्लेखनीय उदाहरण सुल्तानगंज बुद्ध (बिहार में भागलपुर के पास) है।
- सारनाथ में बुद्ध की छवियों में दोनों कंधों को कवर करने वाली सादे पारदर्शी पर्दे हैं। सिर के चारों ओर प्रभामंडल में बहुत कम अलंकरण है।

Q.26) भारत के मध्यकालीन इतिहास के संदर्भ में, शब्द 'जरीबाना' और 'मुहासिलाना' निम्नलिखित में से किसके लिए है?

a) शेरशाह सूरी के प्रशासन में किसानों द्वारा भुगतान किए गए उपकर।
b) मुगलों द्वारा सूफी संतों को दी गई अनुदान भूमि।
c) मुगल काल के दौरान मौजूद दासों के प्रकार।
d) अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान व्यापारियों द्वारा किया गया सीमा शुल्क भुगतान।

Q.26) Solution (a)

- शेर शाह ने पहली बार फसल दरों (रय) की अनुसूची प्रस्तुत की। उन्होंने ज़बती-ए-हर-साल (भूमि मूल्यांकन प्रत्येक वर्ष) को अपनाकर भूमि राजस्व प्रणाली में सुधार किया तथा सभी खेती योग्य भूमि को तीन प्रमुखों (अच्छी, मध्यम, बुरी) में वर्गीकृत किया।
- राज्य के हिस्से का निर्धारण करने के लिए आमिलों ने खेती के तहत भूमि की माप का उपयोग किया। राज्य की हिस्सेदारी औसत उपज का एक तिहाई थी और इसका भुगतान नकद या फसल में किया गया था।
- किसानों को एक पट्टा (शीर्षक विलेख) और एक क़बुलियत (समझौते का विलेख) दिया गया, जिसने किसान अधिकारों और करों को निर्धारित किया।
- भू-राजस्व के अलावा, कृषकों को कुछ अतिरिक्त उपकरों का भुगतान भी करना पड़ता था, जैसे कि जरीबाना या 'सर्वेक्षक शुल्क' और मुहासिलाना या 'कर संग्रह शुल्क' जो क्रमशः 2.5% और 5 प्रतिशत भूमि राजस्व की दर से थे।

Q.27) विजयनगर साम्राज्य की 'अमर-नायक' प्रणाली के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

1. नायक सेना के कमांडर थे जिन्हें शासन करने के लिए क्षेत्र दिए गए थे।
2. नायक अपने अमरम में कृषि गतिविधियों के विस्तार के लिए उत्तरदायी थे।
3. नायक को केवल किसानों से कर एकत्र करने का अधिकार था।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.27) Solution (a)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	असत्य
विजयनगर प्रशासन की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक अमर-नायक प्रणाली थी। सेना के शीर्ष-ग्रेड अधिकारियों को नायक या पलायगार या पोलिगार के रूप में जाना जाता था। दिलचस्प बात यह है कि इन अधिकारियों को उनकी सेवाओं के बदले जमीन (अमरम) दी	नायक अपने अमरम (क्षेत्र) में कृषि गतिविधियों के विस्तार के लिए उत्तरदायी थे। उसने अपने क्षेत्र में कर एकत्र किया और इस आय के साथ अपनी सेना, घोड़ों, हाथियों और युद्ध के हथियारों को बनाए रखा जो उसे राय या विजयनगर शासक को आपूर्ति करना था।	अमर-नायक को क्षेत्र में किसानों, कारीगरों और व्यापारियों से कर और अन्य बकाया राशि एकत्र करने की अनुमति थी। कुछ राजस्व का उपयोग मंदिरों और सिंचाई कार्यों के रखरखाव के लिए भी किया जाता था। नायक किलों के

गई थी, जबकि सैनिकों को आमतौर पर नकद में भुगतान किया जाता था।		सेनापति भी थे।

Q.28) निम्नलिखित में से किस गुफा में, नटराज की मूर्ति, सप्तमातृकों के पूर्ण-आकार के बड़े चित्रण से घिरी हुई पाई गई?

a) एहोल की गुफाएँ
b) गुंटापल्ली की गुफाएँ
c) पित्तलखोरा गुफाएँ
d) बादामी की गुफाएँ

Q.28) Solution (a)

- सप्तमातृक हिंदू धर्म में पूजित सात महिला देवताओं का एक समूह है जो अपने संबंधित देवताओं की ऊर्जा को व्यक्त करती हैं।
- ऐहोल (कर्नाटक) में रावण फाड़ी गुफा में सबसे महत्वपूर्ण मूर्तियों में से एक नटराज की है, जो सप्तमातृकों के पूर्ण-आकार के बड़े चित्रण से घिरी है।
- सप्तमातृक: शिव के बाएं तीन और उनके दाहिने ओर चार हैं। चित्र सुंदर, पतले शरीर वाले होते हैं, लंबे, अंडाकार चेहरे बेहद ऊंचे बेलनाकार मुकुट सबसे ऊपर होते हैं तथा छोटे धारीदार धोती पहने हुए दर्शायी जाती हैं, जो सुसज्जित धारियों से चिह्नित होती हैं।

Q.29) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

रंगमंच का रूप	राज्य
1. स्वांग (Swang)	बिहार
2. भाओना (Bhaona)	असम
3. भवाई	मध्य प्रदेश

ऊपर दी गई कौन सी जोड़ी गलत तरीके से मेल खाती है?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3

c) केवल 1 और 3
d) केवल 2 और 3

Q.29) Solution (c)

युग्म 1	युग्म 2	युग्म 3
असत्य	**सत्य**	**असत्य**
स्वांग पंजाब और हरियाणा के क्षेत्र में मनोरंजन का एक और लोकप्रिय स्रोत है। वे मुख्य रूप से संगीत नाटक हैं, जिसमें छंद के माध्यम से गाया जाता है, साथ में इकतारा, हारमोनियम, सारंगी, ढोलक और खरताल का संगीत होता है।	भाओना असम, खासकर माजुली द्वीप का एक लोक रंगमंच है। विचार मनोरंजन और नाटक के माध्यम से लोगों को धार्मिक और नैतिक संदेश फैलाना है। यह अंकिया नाट की प्रस्तुति है और वैष्णव विषय सामान्य हैं। सूत्रधार (कथावाचक) नाटक का वर्णन करता है और पवित्र ग्रंथों से छंद गाता है। गीत और संगीत भी इसका एक हिस्सा हैं।	भवाई गुजरात और राजस्थान का एक लोकप्रिय लोक रंगमंच है, जो मुख्य रूप से कच्छ और काठियावाड़ के क्षेत्रों में होता है। इस रूप में छोटे नाटकों की एक श्रृंखला का वर्णन करने के लिए नृत्य का एक व्यापक उपयोग शामिल है, जिसे वैश या स्वंग के रूप में जाना जाता है, प्रत्येक अपने स्वयं के कथानक के साथ होते हैं। नाटक का विषय आम तौर पर रोमांटिक होता है। यह नाटक एक अर्ध-शास्त्रीय संगीत के साथ होता है, जिसे एक अलग लोक शैली में खेला जाता है, जैसे कि भुंगला, झांझा और तबला। सूत्रधार को भवाई थिएटर में नायक के रूप में जाना जाता है।

Q.30) निम्नलिखित में से कौन, भारत की यूनेस्को सूची में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल हैं?

1. कालबेलिया
2. संकीर्तन
3. यक्षगान
4. कथकली
5. नवरोज उत्सव

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1, 3, और 4
b) केवल 1, 2 और 5
c) केवल 2, 4 और 5

d) केवल 1, 2, 3 और 5

Q.30) Solution (b)

यूनेस्को सूची की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

- सूची उन अमूर्त विरासत तत्वों से बनी है जो सांस्कृतिक विरासत की विविधता को प्रदर्शित करने में मदद करते हैं और इसके महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं।
- यह सूची 2008 में स्थापित की गई थी, जब अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए कन्वेंशन प्रभावी हुआ था।
- यूनेस्को ने अपने अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के बैनर तले तीन सूचियों को बनाए रखा है:
    - तत्काल सुरक्षा की आवश्यकता में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची।
    - मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची।
    - अच्छे सुरक्षा अभ्यासों का रजिस्टर।

भारत की यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

क्रम सं	अमूर्त सांस्कृतिक विरासत	सम्मिलन वर्ष
1	वैदिक जप की परंपरा	2008
2	रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन	2008
3	कुटियाट्टम, संस्कृत थिएटर	2008
4	रम्मन, गढ़वाल हिमालय का धार्मिक त्योहार और अनुष्ठान थियेटर	2009
5	मुदियेट्टू, आनुष्ठानि थिएटर और केरल का नृत्य नाटक	2010
6	कालबेलिया लोक गीत और राजस्थान के नृत्य	2010
7	छऊ नृत्य	2010
8	लद्दाख का बौद्ध जप: ट्रांस हिमालयन लद्दाख क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर: भारत में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ	2012
9	संकीर्तन, अनुष्ठानिक गायन, ढोलक वादन और नृत्य, मणिपुर	2013
10	जंडियाला गुरु, पंजाब, भारत के ठठेरों के बीच बर्तन बनाने के पारंपरिक पीतल और तांबे के शिल्प	2014
11	योग	2016
12	नवरोज उत्सव	2016
13	कुंभ मेला	2017

Q.31) चित्रकला की कोटा, बूंदी और झालावाड़ शैली, निम्नलिखित में से किस स्कूल की चित्रकला है?

a) मेवाड़ स्कूल
b) मारवाड़ स्कूल
c) हाडोती स्कूल
d) धुंदर स्कूल

Q.31) Solution (c)

राजस्थान में चित्रकला के स्कूल:

- सोलहवीं शताब्दी के पूर्ववर्ती दशकों में, कला के राजपूत स्कूलों ने विशेष शैलियों का विस्तार करना आरंभ कर दिया, जिसमें आदिवासी और साथ ही, दूरस्थ क्षेत्रों की विशेष शैलियों को शामिल किया गया।
- राजस्थानी चित्रकला में 4 प्रमुख स्कूल (मेवाड़, मारवाड़, हाड़ोती और धुंदर) शामिल हैं, जिनके भीतर कई कल्पनात्मक शैली हैं, जो इन कलाकारों का उपयोग करने वाली विभिन्न रियासतों को रेखांकित कर सकते हैं।

स्कूल	शैलियाँ	विशेषताएं
मेवाड़ स्कूल	नाथद्वारा, चावंड, उदयपुर, सावर और देवगढ़ चित्रकला की शैलियाँ	• सरल ज्वलंत रंग और प्रत्यक्ष मार्मिक अपील द्वारा प्रतिष्ठित।
मारवाड़ स्कूल	किशनगढ़, बीकानेर, जोधपुर, पाली, नागौर और घनेराव शैली।	• मुग़ल प्रभाव और कुलीनों को दरबार में और घोड़ों के दृश्यों को अंकित किया गया • त्योहारों, चित्रों, हाथी युद्ध, शिकार अभियान और समारोहों को आम तौर पर दर्शाया जाता है। • विषयों में भगवान कृष्ण के जीवन से एकत्रित दृश्य भी शामिल हैं।
हाड़ोती स्कूल	कोटा, बूंदी और झालावाड़ शैली	• राव चत्तर शाल (उन्हें शासक, शाहजहाँ द्वारा दिल्ली का राज्यपाल बनाया गया था) के अधीन थी। • हाड़ोती क्षेत्र कला का खजाना था। हाड़ोती चित्रों को राजपूत शैली में चित्रों की सबसे अधिक श्रेष्ठता के साथ देखा जाता है।
धूंदर स्कूल	अंबर, जयपुर, शेखावाटी और उनियारा शैली	• अपने कुलीन लोक चित्रों के लिए बहुत विख्यात थी। • चित्रकला उत्कृष्ट रचनाएं हैं तथा बड़ी आंखों, गोल चेहरे, नुकीली नाक और लंबी गर्दन वाली भव्य महिलाओं को चित्रित करती हैं।

Q.32) निम्नलिखित संगठनों को उनके गठन के अनुसार, कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।

1. इंडियन लीग
2. बंगभाषा प्रकाशिका सभा
3. पूना सार्वजनिक सभा
4. ईस्ट इंडिया एसोसिएशन

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) 2 - 4 - 1 - 3
b) 2 - 4 - 3 - 1
c) 4 - 2 - 1 - 3
d) 4 - 2 - 3 - 1

Q.32) Solution (b)

- 1836: बंगभाषा प्रकाशिका सभा, 1836 में राजा राममोहुन रॉय के सहयोगियों द्वारा सरकार की नीति पर चर्चा करने तथा याचिकाओं और ज्ञापनों के माध्यम से निवारण करने के उद्देश्य से गठित एक राजनीतिक संघ थी।
- 1866: दादाभाई नौरोजी द्वारा लंदन में 1866 में ईस्ट इंडियन एसोसिएशन का आयोजन भारतीय मुद्दों पर चर्चा करने और भारतीय कल्याण को बढ़ावा देने के लिए ब्रिटिश आम जनों को प्रभावित करने के लिए किया गया था।
- 1870: सरकार और लोगों के बीच सेतु के रूप में सेवा के उद्देश्य से पूना में एम जी रानाडे, गणेश वासुदेव जोशी और एस एच चिपलूनकर द्वारा पूना सार्वजनिक सभा का गठन किया गया।
- 1875: इंडियन लीग की स्थापना सिसिर कुमार घोष ने "लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को उत्तेजित करने" और राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से की थी।
- इसलिए सही क्रम बंगभाषा प्रकाशिका सभा - ईस्ट इंडियन एसोसिएशन - पूना सर्वजन सभा - इंडियन लीग है।

Q.33) उन्नीसवीं सदी के अंत तक, भारतीय निर्यात में मुख्य रूप से शामिल थे

1. कच्चा कपास
2. जूट और रेशम
3. तिलहन
4. गेहूँ
5. नील

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1, 2 और 5
b) केवल 1, 2, 4 और 5
c) केवल 1, 2 और 3
d) 1, 2, 3, 4 और 5

Q.33) Solution (d)

- तैयार माल निर्यात करने के बजाय, भारत को कच्चे कपास और कच्चे रेशम जैसे कच्चे माल का निर्यात करने के लिए मजबूर किया गया था, जिसकी ब्रिटिश उद्योगों को तत्काल आवश्यकता थी, या भारत के खाद्यान्न, नील और चाय जैसे वृक्षारोपण उत्पादों की, जिनकी ब्रिटेन में कम आपूर्ति थी।

- 1856 में, भारत ने £ 4,300,000 मूल्य की कच्ची कपास का निर्यात किया, जिसमे केवल £ 810,000 मूल्य की कपास उत्पादित थी, £ 2,900,000 मूल्य का खाद्यान्न, £ 1,730,000 की नील और £ 770,000 मूल्य की कच्ची रेशम का निर्यात किया।
- उन्नीसवीं सदी के अंत तक, भारतीय निर्यात में मुख्य रूप से कच्चे कपास, जूट और रेशम, तिलहन, गेहूं, चमड़े की खाल, नील और चाय शामिल थी।
- 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश नीतियों ने कपास, जूट, मूंगफली, तिलहन, गन्ना, तम्बाकू आदि वाणिज्यिक फसलों की खेती को प्रोत्साहित किया, जो कृषि के व्यावसायीकरण की ओर अग्रसर खाद्यान्न की तुलना में अधिक पारिश्रमिक-संबंधी थे।

Q.34) निम्नलिखित में से कौन 'श्रीमद भगवद गीता रहस्य' और 'वेदोंं का आर्कटिक गृह' पुस्तकों के लेखक थे?

a) अरबिंदो घोष
b) स्वामी दयानंद सरस्वती
c) बाल गंगाधर तिलक
d) एनी बेसेंट

Q.34) Solution (c)

- बाल गंगाधर तिलक एक भारतीय राष्ट्रवादी और एक स्वतंत्रता कार्यकर्ता थे जिनका जन्म 22 जुलाई, 1856 को दक्षिण-पश्चिमी महाराष्ट्र के एक छोटे से तटीय शहर रत्नागिरी में हुआ था। ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने उन्हें "भारतीय अशांति का जनक" कहा।
- तिलक ने भारतीय छात्रों के बीच राष्ट्रवादी शिक्षा को प्रेरित करने के उद्देश्य से कॉलेज के सहपाठी, विष्णु शास्त्री चिपलूनकर और गोपाल गणेश आगरकर के साथ डेक्कन एजुकेशनल सोसाइटी की शुरुआत की।
- उनकी शिक्षण गतिविधियों के समानांतर, तिलक ने दो समाचार पत्रों मराठी में 'केसरी' और अंग्रेजी में 'मराठा' की स्थापना की।
- गंगाधर तिलक 1890 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। वह कांग्रेस के चरमपंथी गुट का हिस्सा थे तथा बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलनों के समर्थक थे।
- वह एनी बेसेंट के साथ अखिल भारतीय होम रूल लीग के संस्थापकों में से एक थे।
- 1903 में, उन्होंने 'वेदों का आर्कटिक गृह' पुस्तक लिखी। इसमें, उन्होंने तर्क दिया कि वेद केवल आर्कटिक में ही रचे जा सकते थे, और आर्यन लोग उन्हें पिछले हिमयुग की शुरुआत के बाद दक्षिण में ले आए। उन्होंने वेदों के सटीक समय को निर्धारित करने के लिए एक नया तरीका प्रस्तावित किया।
- तिलक ने मांडले की जेल में "श्रीमद्भगवद् गीता भाष्य" - भगवद्गीता में 'कर्म योग' का विश्लेषण लिखा, जिसे वेदों और उपनिषदों का एक उपहार माना जाता है।
- उन्हें "लोकमान्य" की उपाधि से सम्मानित किया गया, जिसका अर्थ "लोगों द्वारा स्वीकार किया गया (उनके नेता के रूप में)" है। महात्मा गांधी ने उन्हें "आधुनिक भारत का निर्माता" कहा। तिलक स्वराज के पहले और सबसे मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे।
- उन्हें मराठी में उनके उद्धरण के लिए जाना जाता है: "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मै इसे लेकर रहूँगा"।

Q.35) निम्नलिखित में से कौन सी घटना सबसे पहले घटित हुई थी?

a) मुक्ति दिवस (Day of Deliverance)
b) राष्ट्रीय अपमान दिवस (National Humiliation Day)
c) एकता और एकजुटता दिवस (Day of Unity and Solidarity)
d) स्वतंत्रता दिवस

Q.35) Solution (c)

एकता और एकजुटता दिवस	16 अक्टूबर 1905	बंगाल विभाजन के बाद रवींद्रनाथ टैगोर ने मनाया।
राष्ट्रीय अपमान दिवस	6 अप्रैल 1919	रौलेट एक्ट , एक 'काले अधिनियम' के समय गांधी जी द्वारा पारित किया गया था।
स्वतंत्रता दिवस	26 जनवरी 1930	लाहौर अधिवेशन के बाद पूर्ण स्वराज का संकल्प।
मुक्ति दिवस	22 दिसंबर 1939	कांग्रेस विधायकों के इस्तीफा देने के बाद जिन्ना ने मुस्लिम लीग के नेतृत्व में पारित किया।
प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस / महान कलकत्ता हत्याएं	16 अगस्त 1946	मुस्लिम लीग द्वारा मुस्लिम शक्ति प्रदर्शन के लिए कैबिनेट मिशन के तहत अलग पाकिस्तान की मांग को नकार दिए जाने पर मनाया गया था।

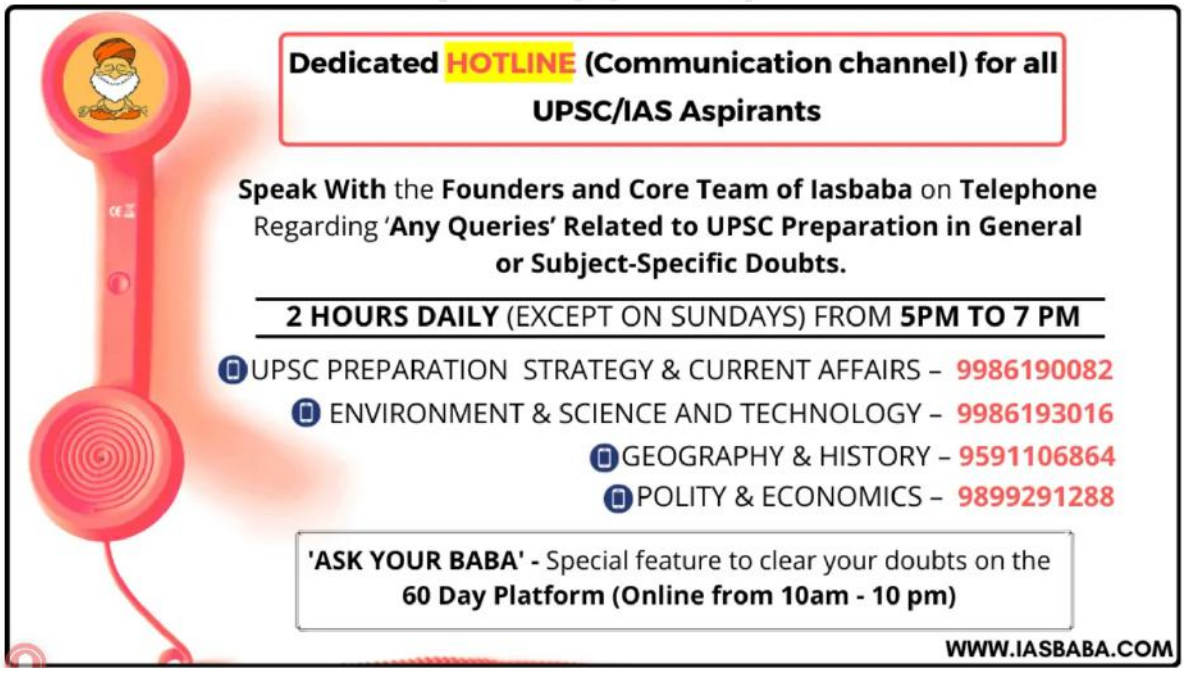

Q.36) वह एक महान परोपकारी व्यक्ति थे; उन्होंने ट्रिप्लिकेन, नुंगम्बक्कम और नेल्लोर में आयुर्वेदिक अस्पताल आरंभ किए; उन्हें समाज के लिए उनकी सेवा हेतु एनी बेसेंट द्वारा 'धर्ममूर्ति' और ब्रिटिश सरकार द्वारा 'राय बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। वह थे

a) वीरसलिंगम पंतुलु

b) कलवला कुन्नन चेट्टी
c) रेट्टिमिलाई श्रीनिवासन
d) सी.पी. रामास्वामी अय्यर

Q.36) Solution (b)

- इंडिया पोस्ट ने 24 अगस्त 2019 को कलवला कुन्नान चेट्टी पर एक स्मारक डाक टिकट जारी किया है। कलवला कुन्नन चेट्टी एक महान परोपकारी व्यक्ति थे। उन्होंने समाज के उत्थान के लिए खुद को समर्पित कर दिया। उनका जन्म कलवला परिवार में वर्ष 1869 में हुआ था।
- एनी बेसेंट ने मरणोपरांत श्री कुन्नान चेट्टी को 'धर्ममूर्ति' की उपाधि से सम्मानित किया। ब्रिटिश सरकार द्वारा समाज में उनकी सेवा के लिए "राय बहादुर" का प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया था।
- अपने जीवन काल के दौरान, उन्होंने तिरुवल्लूर और पेरम्बूर में दो स्कूलों की स्थापना की तथा एक संस्कृत महाविद्यालय, लड़कियों के लिए प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय चिन्टद्रिपेट में स्थापित किया और चेन्नई और उसके आसपास के कई स्कूलों को वित्तीय सहायता दी।
- उन्होंने ट्रिप्लिकेन, तुंगमबक्कम और नेल्लोर में आयुर्वेदिक अस्पताल आरंभ किए। आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में वयस्कों के लिए शाम के स्कूल आरंभ करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था।

Q.37) स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में, 'दिल्ली चलो आंदोलन' निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?

a) साइमन कमीशन के खिलाफ विरोध
b) सविनय अवज्ञा आंदोलन
c) व्यक्तिगत सत्याग्रह
d) भारत छोड़ो आंदोलन

Q.37) Solution (c)

- व्यक्तिगत सत्याग्रह: 1940 में, अगस्त प्रस्ताव के प्रतिउत्तर में, गांधीजी ने प्रत्येक क्षेत्र में कुछ चुने हुए व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत आधार पर एक सीमित सत्याग्रह, अर्थात् व्यक्तिगत सत्याग्रह आरंभ करने का फैसला किया था।
- सत्याग्रही की मांग युद्ध-विरोधी घोषणा के माध्यम से युद्ध के खिलाफ बोलने की स्वतंत्रता थी। यदि सरकार ने सत्याग्रही को गिरफ्तार नहीं किया, तो वह न केवल इसे दोहराएंगे, बल्कि गांवों में ले जायेंगे और दिल्ली की ओर मार्च आरंभ करेंगे, इस तरह एक आंदोलन को तेज करेंगे जिसे "दिल्ली चलो आंदोलन" के रूप में जाना जाता है।
- विनोबा भावे पहले सत्याग्रह और नेहरू दूसरे थे।

Q.38) आधुनिक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित प्रस्तावों पर विचार करें:

1. मौलिक अधिकार
2. राष्ट्रीय शिक्षा परिषद
3. राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम

निम्नलिखित में से कौन सा संकल्प 1931 में कराची में आयोजित कांग्रेस के एक विशेष सत्र में अपनाया गया था?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1
d) केवल 1 और 3

Q.38) Solution (d)

- मार्च 1931 में, कांग्रेस का एक विशेष सत्र कराची में (सरदार पटेल की अध्यक्षता में) गांधी-इरविन समझौते का समर्थन करने के लिए आयोजित किया गया था।

कराची में कांग्रेस का संकल्प:

1. राजनीतिक हिंसा से स्वयं को अलग करने और उसे अस्वीकृत करते हुए, कांग्रेस ने तीनों शहीदों की 'बहादुरी' और 'बलिदान' की प्रशंसा की।
2. दिल्ली संधि या गांधी-इरविन संधि का समर्थन किया गया।
3. पूर्ण स्वराज का लक्ष्य दोहराया गया।
4. दो संकल्पों को अपनाया गया- एक मौलिक अधिकारों पर और दूसरा राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम पर, जिसने सत्र को विशेष रूप से यादगार बना दिया।

मौलिक अधिकारों पर संकल्प की गारंटी -

- नि: शुल्क भाषण और मुक्त प्रेस, संघों का गठन करने का अधिकार, इकट्ठा करने का अधिकार
- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, जाति, पंथ और लिंग के आधार पर बिना विभेद किये समान कानूनी अधिकार
- धार्मिक मामलों में राज्य की निष्पक्षता
- मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा
- संस्कृति, भाषा, अल्पसंख्यकों और भाषाई समूहों की सुरक्षा

राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम पर संकल्प शामिल -

- भू-स्वामियों और किसानों के मामले में लगान और राजस्व में पर्याप्त कमी
- कृषि ऋणग्रस्तता से राहत के लिए गैर-आर्थिक जोत के लिए लगान से छूट
- काम की बेहतर स्थितियाँ जिसमें एक जीवित रहने योग्य मजदूरी, काम के सीमित घंटे और औद्योगिक क्षेत्र में महिला श्रमिकों की सुरक्षा शामिल था
- मजदूरों और किसानों का संघ बनाने का अधिकार
- प्रमुख उद्योगों, खानों और परिवहन के साधनों का राज्य स्वामित्व और नियंत्रण

यह पहली बार था जब कांग्रेस ने कहा कि स्वराज जनता के लिए क्या अर्थ होगा- "जनता के शोषण को समाप्त करने हेतु, राजनीतिक स्वतंत्रता में लाखों भूखे रहने वालों के लिए आर्थिक स्वतंत्रता शामिल होनी चाहिए।"

कराची संकल्प बाद के वर्षों में कांग्रेस का मूल राजनीतिक और आर्थिक कार्यक्रम बना रहना था।

राष्ट्रीय शिक्षा परिषद बंगाल में भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा स्थापित एक संगठन था। 1906 में, आईएनसी के कलकत्ता सत्र (दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में), स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा पर चार प्रस्ताव पारित किए गए थे। इसलिए कथन 2 गलत है।

Q.39) भारत सरकार अधिनियम, 1935 की निम्नलिखित में से कौन-सी / से प्रमुख विशेषताएं हैं?

1. इसने केंद्र में द्वैधशासन (dyarchy) को अपनाने के लिए प्रावधान किया।
2. इसने वंचित वर्गों और महिलाओं के लिए पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान प्रदान किया।

3. इसने भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना के लिए प्रावधान प्रदान किया।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.39) Solution (d)

- भारत सरकार अधिनियम, 1935 भारत में पूरी तरह से उत्तरदायी सरकार की दिशा में एक मील का पत्थर साबित किया। यह एक लंबा और विस्तृत दस्तावेज था जिसमें 321 खंड और 10 अनुसूचियां थीं।

अधिनियम की विशेषताएं:

1. इसने इकाइयों के रूप में प्रांतों और रियासतों को मिलाकर एक अखिल भारतीय महासंघ की स्थापना के लिए प्रावधान प्रदान किया। अधिनियम ने केंद्र और इकाइयों के बीच शक्तियों को तीन सूचियों के संदर्भ में विभाजित किया- संघीय सूची (केंद्र के लिए, 59 वस्तुओं के साथ), प्रांतीय सूची (प्रांतों के लिए, 54 वस्तुओं के साथ) और समवर्ती सूची (दोनों के लिए, 36 वस्तुओं के साथ)। वायसराय को अवशेष शक्तियां दी गईं। हालाँकि, संघ कभी अस्तित्व में नहीं आया क्योंकि रियासतें इसमें शामिल नहीं हुईं।
2. इसने प्रांतों में द्वैधशासन को समाप्त कर दिया तथा इसके स्थान पर 'प्रांतीय स्वायत्तता' की शुरुआत की। प्रांतों को उनके परिभाषित क्षेत्रों में प्रशासन की स्वायत्त इकाइयों के रूप में कार्य करने की अनुमति थी। इसके अलावा, अधिनियम ने प्रांतों में उत्तरदायी सरकारों को पेश किया, अर्थात, गवर्नर को प्रांतीय विधायिका के प्रति उत्तरदायी मंत्रियों की सलाह के साथ कार्य करने की आवश्यकता थी। यह 1937 में लागू हुआ और 1939 में समाप्त कर दिया गया।
3. इसने केंद्र में द्वैधशासन को अपनाने के लिए प्रावधान किया। नतीजतन, संघीय विषयों को आरक्षित विषयों और स्थानांतरित विषयों में विभाजित किया गया था। हालाँकि, अधिनियम का यह प्रावधान लागू नहीं हुआ।
4. इसने ग्यारह प्रांतों में से छह में द्विसदनीयता का परिचय दिया। इस प्रकार, बंगाल, बॉम्बे, मद्रास, बिहार, असम और संयुक्त प्रांत की विधानसभाओं को एक विधान परिषद (उच्च सदन) और एक विधान सभा (निम्न सदन) से युक्त द्विसदनीय बनाया गया। हालांकि, उन पर कई प्रतिबंध लगाए गए थे।
5. इसने वंचित वर्गों (अनुसूचित जातियों), महिलाओं और श्रमिकों (श्रमिकों) के लिए पृथक निर्वाचक मंडल प्रदान करके सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को आगे बढ़ाया।
6. इसने 1858 के भारत सरकार अधिनियम द्वारा स्थापित भारत की परिषद को समाप्त कर दिया। भारत के राज्य सचिव को सलाहकारों की एक टीम प्रदान की गई।
7. इसने मताधिकार का विस्तार किया। कुल आबादी के लगभग 10 फीसदी लोगों को मतदान का अधिकार मिला।
8. इसने देश की मुद्रा और ऋण को नियंत्रित करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना का प्रावधान किया।
9. इसने न केवल एक संघीय लोक सेवा आयोग की स्थापना की बल्कि दो या दो अन्य प्रांतों के लिए एक प्रांतीय लोक सेवा आयोग और संयुक्त लोक सेवा आयोग की स्थापना की।

10. इसमें एक संघीय न्यायालय की स्थापना के लिए प्रावधान प्रदान किया गया था, जिसे 1937 में स्थापित किया गया था।
11. सिंध और उड़ीसा के नए प्रांत बनाए गए।

Q.40) निम्नलिखित घटनाओं पर विचार करें:

1. भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना पूर्व सोवियत संघ की सहायता से की गई।
2. गुट निरपेक्ष आंदोलन (NAM) का पहला शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।
3. संविधान को 'प्रिवी पर्स' के उन्मूलन के लिए वैधानिक बाधाओं को हटाने के लिए संशोधित किया गया।
4. द्विभाषी राज्य बंबई को मराठी और गुजराती बोलने वालों के लिए अलग-अलग राज्यों में विभाजित किया गया।

उपरोक्त घटनाओं में से कौन सा सही कालानुक्रमिक अनुक्रम है?

a) 2 - 4 - 1 - 3
b) 1 - 4 - 2 - 3
c) 2 - 3 - 1 - 4
d) 1 - 3 - 2 - 4

Q.40) Solution (b)

- भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना 1959 में पूर्व सोवियत संघ के सहयोग से की गई थी। छत्तीसगढ़ के पिछड़े ग्रामीण क्षेत्र में स्थित, इसे स्वतंत्रता के बाद आधुनिक भारत के विकास के एक महत्वपूर्ण संकेत के रूप में देखा जाने लगा।
- 1 अक्टूबर 1953 को आंध्र प्रदेश के निर्माण के बाद, अन्य भाषाई समुदायों ने भी अपने अलग राज्यों की मांग की। एक राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की गई, जिसने 1956 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें जिले और प्रांतीय सीमाओं को क्रमशः असम, बंगाली, उड़िया, तमिल, मलयालम, कन्नड़ और तेलुगु बोलने वालों के सीमित प्रांत बनाने की सिफारिश की गई थी। 1960 में, द्विभाषी राज्य बंबई मराठी और गुजराती बोलने वालों के लिए अलग-अलग राज्यों में विभाजित किया गया था।
- 1955 में इंडोनेशियाई शहर बांडुंग में आयोजित एफ्रो-एशियाई सम्मेलन, जिसे आमतौर पर बांडुंग सम्मेलन के रूप में जाना जाता है, ने नए स्वतंत्र एशियाई और अफ्रीकी देशों के साथ भारत के जुड़ाव को चिन्हित किया। बांडुंग सम्मेलन ने बाद में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की स्थापना की। NAM का पहला शिखर सम्मेलन सितंबर 1961 में बेलग्रेड में आयोजित किया गया था। नेहरू NAM के सह-संस्थापक थे।
- 1971 के चुनाव में इंदिरा गांधी की भारी जीत के बाद, संविधान में 'प्रिवी पर्स' के उन्मूलन के लिए वैधानिक बाधाओं को हटाने के लिए संशोधन किया गया था। 26 वें संशोधन अधिनियम, 1971 ने रियासतों के पूर्व शासकों के प्रिवी पर्स और विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया।
- इसलिए विकल्प (ब) सही अनुक्रम है।

Copyright © by IASbaba

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying,

recording or otherwise, without prior permission of IASbaba.